[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3578

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत की राग–रागिनियो का रंगो द्वारा मनभावन चित्रण

प्रो. विनीता वर्मा
विभागाध्यक्ष, वाद्य संगीत
म.ल.बा.शा.कन्या महा., इन्दौर

यथा नृत्ते तथा चित्रे त्रैलोक्यानुकृति स्मृतः।
दृष्टर्यस्तु तथा भाव अगं गोपांग गानि सर्वशः।।
कराश्च ये मता नत्ते पूर्वोक्ता नृपसत्त्मं।
त एव चित्रे विज्ञेमा नृतं चित्रम परम मतम्।।

विष्णु धर्मोत्तरपुररण 3/35/5–7

अर्थात् विभिन्न कलाओं की दृष्टि, अभिनय अंगोपाग आदि मिलकर एक परमचित्र का निर्माण करते हैं। क्योंकि सभी कलाओं में संगीत ही सबसे अधिक सूक्ष्म एवं भावप्रधान विशेषताओं से अंलकृत हैं। जैसे स्वर के गुण अथवा वाद्य यंत्रो को इस प्रकार बजाना कि अनुपात, संतुलन समरसता आलाप, तान लय ताल की दृष्टि से किसी राग–रागिनी का बारीक स्वर संयोजन और सुरीलापन ठीक प्रबलता, मात्रा और वैविध्य के साथ अभिव्यक्त हो जाये।साथ ही अपने ओज माधुर्य सौन्दर्य तथा सजीवता के कारण चित्रकला को विशेष शोभामय तथा अन्य कलाओ की तुलना में श्रेष्ठ मानकर लिखा गया है–

कलानां प्रवरं चित्रम् धर्म काम्यार्थ मोक्षदम्।
मांगल्यं प्रथमं चैतग्रहे यत प्रतिष्ठितम्।

भारत वर्ष की सम्पूर्ण ललित कलाओं का जिसमें संगीत, साहित्य, चित्रकला आदि आती। उनका मुख्य लक्ष्य परमानन्द की अनुभूति तथा उद्देश्य भावाभिव्यक्ति है। सभी का क्षेत्र अलग–अलग होने के बाद भी सभी कलाओं का एक ही लक्ष्य। ये कलाएँ अपने–अपने धर्म गुणों के कारण परम आनंद को प्राप्त कराती। और यही गुण सभी कलाओं में समानता स्थापित करता है।

प्रकृति में निरन्तर चलने वाला पक्षियों का कलरव, झरनों का कल कल, छल–छल संगीत का द्योतक है। तो इन्द्र धनुष प्रथम प्राकृतिक चित्र। प्रकृति की सहचारी ये दोनों कलाएँ मानव का अभिन्न अंग बनकर मानव विकास के साथ ही विकसित हुई। मानव अपने हृदयगत भावों का देखने, सुनने या स्पर्श करने का सदैव उद्यत रहता है।इन कलाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम क्रमशः ध्वनि और रंग है इन दोनों कलाओं का संबंध शास्त्रकारा ने स्वीकार किया है।

मार्केण्डेय मुनि ने ''चित्र सूत्रम में चित्रकला सीखने से पूर्व संगीत ज्ञान की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। भरतमुनिकृत ''नाट्य शास्त्र'' में रंग एवं भाव के संबंधों का वर्णन है। ध्यान मंत्रो में विभिन्न रागों के लिये पृथक–पृथक रंगों का उपयोग भरत की शिक्षा का ही परिणाम है। राग ध्यान अधिकाशतः संस्कृत में ही लिखे जाते थे, किन्तु अधिक लोकप्रियता के लिये हिन्दी में भी ध्यान मंत्र लिखे जाने लगे क्योंकि राग रागिनियों को चित्र रूप प्रदान करने के लिये यह बहुत ही सहज होते थे। ये राग ध्यान ही राग रागिनी चित्रो के आधार बने कई संगीत ग्रन्थो में राग–रागिनियों का ध्यान भी निश्चित कर दिया गया था। इस ध्यान का आधार था– राग स्वरों से उत्पन्न भाव जिसे श्लोकबद्ध किया गया और इसे ही आधार मानकर राग चित्रों की रचना की गई।

चित्रकला –

प्रकृति एवं परिवेशगत नैसर्गिक सौन्दर्य एवं निस्सीम आनन्द जब हृदय में अतिरेक–रूप धारण कर उमगता है, तब अलौकिक सृजन होता है। जिसका मूल प्रेरणा–स्त्रोत भी प्रकृति है और सर्जक भी। प्रकृति में कला का यह शाश्वत संबंध संगीत एवं चित्रकला में विशेष रूप से द्रष्टव्य है। संगीत और चित्रकला ने प्रकृति के धरातल पर ही जन्म लिया। संगीत के समान ही चित्रकला भी मनुष्य को प्रकृति का दिया हुआ वरदान है, जिसके कारण आदिम चित्रकार ने सहज, स्वाभाविक रेखाओं

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रकट किया और परवर्ती सन्तति को रेखा का वह अमूल्य उपहार प्रदान किया, जो आज भी चित्रकला का मुख्य आधार है।

मनुष्य की आदि–संगिनी ये दोनों कलाएँ, आज विकसित एवं सभ्य समाज में भी परस्पर जुड़ी हुई दृष्टिगोचर होती हैं। लोक–जीवन में जितनी गहराई से ये दोनों कलाएँ जन–मानस में व्याप्त हैं, उतनी अन्य कलाएँ नहीं। प्रतिदिन तथा विभिन्न मांगलिक अवसरों पर भूमि अथवा भित्ति पर बनाए जाने वाले आलेखन, हथेलियों पर मेहँदी से सजे सुन्दर अलंकरण और दैनिक जीवनचर्या से लेकर विशेष अवसरों पर जन–जीवन में विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त लोकगीत तथा लोकनृत्य इसका प्रमाण हैं। सस्नेह मानव के कंठ से लगकर और सप्रेम उसका हाथ पकड़कर चलने वाली ये दोनों कलाएँ स्वतः ही परस्पर गठबन्धन किए हुए हैं।

भारतीय चित्रकला में संगीत को विशेष स्थान मिला है। संगीत की स्वर–लहरी की भावभूमि पर तूलिका का रंगीन सरस प्रवाहन निरन्तर रूप में गतिशील होता हुआ सदैव जन–जीवन तथा संस्कृति का रसाप्लावित करता रहा है। चित्र के भाव शब्द और स्वरों के माध्यम से गीत–रूप में साकार होते हैं तथा चित्रकार की तूलिका द्वारा रंग तथा रेखाओं के सुन्दर समायोजन से संगीत चित्रों में आकार ग्रहण करता है। दोनों कलाओं के आन्तरिक साम्य के कारण ही संगीत सहज रूप से चित्रकला में मुखरित हुआ है। रागमाला–चित्रण संगीत व चित्रकला के पारस्परिक अन्तर्भाव व प्रगाढ़ संबंध में साक्षात् प्रमाण है।

भारतीय संस्कृति में संगीत एवं चित्रकला को धर्म से संबंधित करते हुए इन्हें ईश्वरोपासना का माध्यम कहा गया है। संगीत का मूल स्त्रोत वेद हैं। वैदिक काल की सामगान–परम्परा से संगीत के स्वरों को विस्तार मिला है और यज्ञवेदी के चारों ओर बनाए जाने वाले स्वस्तिक, नवग्रह एवं अन्य धार्मिक ज्यामितीय आकारों से ही चित्रकला के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है।संगीत और चित्रकला, दोनों में 'सन्तुलन' का अत्यन्त महत्व है। संगीत में स्वर और ताल का सन्तुलन है तथा चित्रकला में रंगों तथा रेखाओं के पारस्परिक सामंजस्य से सन्तुलन स्थापित होता है। सन्तुलन का यह महत्वपूर्ण तत्व भौतिक न होकर अनुभवात्मक होता है, जो दोनों ही कलाओं में माधुर्य उत्पन्न करता है। जिस प्रकार संगीत–कला में स्वर–संयोजन में अनुपात का निर्वाह आवश्यक है, उसी प्रकार चित्रकला में चित्र के समग्र कला–पक्ष की सम्पूर्णता एवं लालित्य के लिए ''अनुपात'' का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

मूलः संगीत–कला एवं चित्रकला की अन्तरात्मा एक ही है। संगीत सूक्ष्म एवं निराकार कला है और चित्रकला रूपप्रधान एवं साकार। इसी कारण चित्रकला संगीत को साकार रूप प्रदानकरने का सर्वश्रेष्ठ तथा सहज माध्यम सिद्ध हुई है। चित्रकला व संगीत का यह पारस्परिक गठबन्धन मानव की अन्तश्चेतना में निहित कला के प्रति उस नैसर्गिक आकर्षण के कारण हुआ है, जो कलाकार के अन्तर्हृदय में उपस्थित कलानुराग के कारण उसके अन्तर्मन की गहराइयों में रच–बस कर कला के इन दो स्वरूपों के साथ एकात्म हो गया है और चित्रकला में रसरंगी, सुरीली धार के रूप में तथा संगीत में स्वरों की सुरंगी छटा के रूप में प्रवाहित होता रहा है। राग के स्वरों के साथ प्रायः संगीत में प्रयुक्त रसों का संबंध माना जाता है और इन्हीं स्वरों के भाव के आधार पर ही रंगों का संबंध प्रस्थापित किया जाता है। प्राचीन महर्षियों ने स्वरों के गुणों का एवं भावों को भली–भांति देकर ही उनका वर्ण आदि का वर्णन किया है। हर स्वर का एक विशिष्ट रंग बताया गया है। तरंगो और ध्वनि इनका निकट का सम्बन्ध है। ध्वनि तरंग प्रकट होते ही एक प्रकार के रंग नजर के सामने आते है। षड्ज का रंग कमल पुष्प के समान रिषभ का रंग ताड़ वृक्ष के पते के समान (हल्का पीलापन) लिये हुए गंधार सोने के समान, मध्यम का रंग कुन्द के फुल के समान सफेद शुभ्र, पंचम का रंग इन्द्रनील मणि के जैसा, धैवत हल्दी के सामन पीले रंग का, निशाद चितकबरे रंग से प्रकट होते है।

चित्रकला के आधार स्वरूप नीला, लाल और पीला इन तीनो रंगो को मूल रंग माना गया है तथा इन्हीं के आधार पर अन्य मिश्रित रंगो की सृष्टि होती है :–लाल रंग अनुराग तथा क्रोध का प्रतीक माना गया है, चित्रो में वीभत्स, क्रोध, घृणा, पाप आदि भावो की सृष्टि इसी रंग से की जाती है। पीला रंग प्रसन्नता और उत्साह का द्योतक है। चित्रकाल अपनी कृति में शान्ति, सद्भावना, उत्साह उमंग और उल्लास के वातावरण की सृष्टि हेतु पीले रंग को आधार बनाते है।नीला रंग महानता और गंभीरता का प्रतीक माना गया है। हरा रंग समृद्धि का द्योतक है। सफेद रंग शान्ति और समृद्धि का द्योतक है। काला रंग उदासीनता, जड़ता का प्रतीक मानकर प्रयोग में लाया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

डॉ. जयसिंह नीरज कहते है राग शब्द का प्रयोग संगीताचार्य मतंग के बृहद्देशी ग्रन्थ में उपलब्ध होता है जिनका समय अनुमान तीसरी से छठी शताब्दी के बीच का मानते। बारहवीं शताब्दी में गीत गोविन्द रचयिता जयदेव ने अपने गीत और अष्ट पदियों को उचित राग और ताल में गाये जाने के निर्देश दिया है। कहीं गुर्जरी राग का निर्देश है तो कहीं बसंत राग का।

प्रायः भारतीय संगीत में छः राग और हरेक की 5–5 रागिनियां मानी गई है। आगे चलकर राग–रागिनियों के पुत्र पौत्रों की भी कल्पना की गई और उसे विस्तृत रूप दिया गया। राग रागिनियों के चित्र की परम्परा कब और कैसे प्राप्त हुई इसके बारे में एक मत नहीं है। अब तक ज्ञात सामग्री के अनुसार राग मालिका का चित्रण 15वीं शताब्दी में माना जाता है। राग माला के चित्र में राजस्थानी चित्रकलाका अधिक योगदान रहा है।
प्रथम राग भैरव का स्वरूप :–भैरव राग में शिव का स्वरूप दिया गया है।

1. भैरवी : भैरव राग की रागिनी का स्वरूप –इस रागिनी में गौरवर्ण युवती को श्वेत ओढ़ना, लाल कंचुकी तथा सुनहरा घाघरा धारण किए हुए शिव को ताल बजाकर प्रसन्न करने में रत है।

2. वैरारी 3. मधुमाधवी 4. सैंधवी 5. बंगाली

द्वितीय राग मालकोश का स्वरूप :–

श्यामवर्ण छत्रधारी चतुर पुरूष, गजुमक्ता की माला धारण किए हुए, हाथ में पुष्प–छड़ी लिए सिंहासन पर विराजमान है।
टोड़ी : मालकोश 1.राग की रागिनी का स्वरूप –

यह नायिका सफेद वस्त्र धारण किए हुए अत्यंत सुकुमार है। ऊँची चौकी पर खड़ी भगवान् की मूर्ति के समक्ष यह रमणी वीणा सुना रही है। निकट ही बारादरी के पास अलंकृत सेज बिछी पड़ी है।

2.गौरी : मालकोश राग की रागिनी का स्वरूप –कोकिल वयन तन वरन सु स्याम नाम सूक्ष्म नाद आबकलि देखिए तै कानी है।धवल वसन मुख देखे चंद लाजै विधि रचि–पचि कै बनाई सुखदानी है।।

3.गुनकली : मालकोश राग की रागिनी का स्वरूप

यह विरहिणी नायिका मैले वस्त्र पहने अपने प्राणप्रिय पति की अनुस्थिति में विरह–व्यथा से क्षीण कदंब के नीचे भवन की अटारी के आगे आसन बिछाए बैठी हुई है। पास ही एक सखी क्षुब्ध नायिका को धैर्य बँधाती हुई दिखाई गई है।

4.खंभायची : मालकोश राग की रागिनी का स्वरूप –

कोयल के समान मधुर वचन बोलने वाली यह मृगनयनी नायिका चतुर सखियों के बीच राग–रंग में लीन है। इस तरूणी के मस्तक पर ओपता शीशफूल, ललाट पर सुंदर टीका और मोतियों की माला है।

5.कुकुभ : मालकेश राग की रागिनी का स्वरूप–

नायिका एक सुंदर मंडल में सुसज्जित पलंग पर मसनद लगाए बैठी है। यह रागिनी संपूर्ण श्रृंगार साधे अंग को मोड़–तोड़ रही है इसके हस्त–कंकन, हार आदि गिरे जा रहे रहे है।

तृतीय राग हिंडोल का स्वरूप –

यह मनमोहक राग कामी कन्हैया के रूप में पीले वस्त्र धारण किए हुए एक हरे–भरे बगीचे के बीच सुंदर हिंडोले में विराजमान हैं, जिसे नायिकाएँ झुला रही हैं। उसके सिर पर मुकुट एवं बाएँ हाथ में वंशी तथा दाहिने में मोतियों का गजरा है। स्वर्ण हिंडोले में झुलाने वाली खड़ी हुई पाँच तरूणियाँ मोरछल, पंखी, किरणिया, चँवर आदि लिए सेवारत हैं और पास ही गायिकाएँ अपने मधुर संगीत से उसे रिझा रही हैं।

1.रामकली : हिंडोल राग की रागिनी का स्वरूप –

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

केसरिया पोशाक धारण किए यह नायिका अपने प्रीतम के सामने सेज पर बैठी है।

2.देसाख : हिंडोल राग की रागिनी का स्वरूप –

मूरति प्रचंड महावीर रस मांझ भरी सांभला की तन रोम परो पिय कीनौ है।

न्यारी ही लियै रहत नायक ही रस वस इति विधि सौतिन कौ तन दुख दीनौ है।।

3.ललित : हिंडोल राग की रागिनी का स्वरूप –

अमृत वचन बोलने वाली यह तरूणी एक सुधाकोष है। नायक प्रातःकाल हुआ देखकर नायिका को शयन–मुद्रा में छोड़ता हुआ एवं पीछे की ओर देखता हुआ बाहर निकल रहा है। पास में खड़ी दासी नायिका की पंखी से हवा कर रही है।

4.बिलावल : हिंडोल राग की रानिगी का स्वरूप –

प्रीतम सौं वादि कै सजत पिय मग जौने बैठी द्वार सोरह सिंगार किए भामनी।

मन में धरत ध्यान कंत कौ अरून चीर तन लीन वीर जैसो जैसी भामनी।।

5.पटमंजरी : हिंडोल राग की रागिनी का स्वरूप –

चतुर्थ राग दीप का स्वरूप –

दीपक राग सुसज्जित मस्त गजराज पर सवार है। इस नायक (दीपक) के शरीर का रंग अग्नि जैसा है और अत्यंत लुभायमान है। **देसी : दीपक राग की रागिनी का स्वरूप –**

इस नायिका का शरीर हरे वस्त्रों से सुसज्जित है। इस गौरवर्ण सुंदरी का अवलोकन कीजिए। भवन की छत पर एक सुसज्जित सेज बिछी पड़ी है।

2.कामोद : दीपक राग की रागिनी का स्वरूप –

इस रागिनी का वर्ण पीला है और सफेद कंचुकी के साथ सुनहरी बूँटीदार लाल रंग के वस्त्र धारण किए हुए अत्यंत शोभायमान लगती है। यह जंगल में अकेली दिखाई गई है और बड़ी उत्सुकता से इधर–उधर अपने पति की राह देखती है।

3.नट : दीपक रग की रागिनी का स्वरूप –

पति के मन को हरने वाली यह नायिका वीर रस की द्योतक है। नीला घोड़ा पास में खड़ा है और उस पर हाथ रखकर चढ़ने की तैयारी में है। नायिका के गले में मोतियों की माला, सिर पर मुकुट, लाल सुनहरी बूँटीदार पोशाक है तथा कमरबंद धारण किए हुए है।

4.केदारो : दीपक राग की रागिनी का स्वरूप –

यह नायिका एक बंगाली के बीच तपस्विनी के भेष में बैठी हुई है। इसके सिर पर जटा–मुकुट, ललाट पर चंद्रमा, सर्प का जनेऊ आदि जोगिन के वेश के द्योतक हैं। अंग पर भभूति रभाए संपूर्ण रूप से जेवर धारण किए हुए है तथा सुनहरा घाँघरा और कंचुकी शोभायमान लगती है।

5.कान्हरो : दीपक राग की रागिनी का स्वरूप –

यह रागिनी वीर रस की द्योतक है। रागिनी का वर्ण श्याम है और सुनहरी चांनणी के नीचे खड़ी दिखाई गई है। सिर पर स्वर्ण मुकुट, श्तेत पोशाक, दाहिने हाथ में तलवार और बाएँ हाथ में टूटा गजदंत है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पंचम श्री राग का स्वरूप –

यह राग कामदेव के सदृश अपनी प्रिया के साथ एक ही सिंहासन पर विराजमान है। सफेद पोशाक, लाल पगड़ी और कमरबंद के साथ श्री राग अत्यंत शोभायमान लगता है।

1.मालश्री : श्री राग की रागिनी का स्वरूप –

आम्र वृक्ष के नीचे अटारी के पास यह नायिका सिंहासन पर बैठी है और सामने एक दासी सेवारत खड़ी है। नायिका लाल रंग की सुंदर केंचुकी तथा पीले रंग की सुनहरी पोशाक धारण किए हुए है। परंतु वह न हँसती है और न बात करती है, क्योंकि प्रियतम से बिछुड़ी हुई है।

2मारू : श्री राग की रागिनी का स्वरूप –

3.धनाश्री : श्री राग की रागिनी का स्वरूप –

विरह की आग से पीड़ित इस नायिका का शरीर जीर्ण है। नायिका वृक्ष के तले तख्त पर बैठी है और जंगल का दृश्य दिखाया गया है। शरीर तो अत्यंत दुर्बल है और जब भी बोलती है, तो उसासें भरकर।

4वसंत : श्री राग की रागिनी का स्वरूप –

यह रागिनी बारादरी के आगे सिंहासन पर बैठी स्वय तँबूरा बजा रही है। श्याम रंग का कोमल शरीर है।

5.आसावरी : श्री राग की रागिनी का स्वरूप –

सफेद चीर धारण किए हुए यह श्यामवर्ण नायिका शीतल जल के पास चंदन वृक्ष के नीचे बैठी है। चारों ओर से सर्प आकर्षित होकर नायिका की ओर बढ़ रहे है और कुछ उसके शरीर पर लिपटे हुए हैं।

षष्ठ मेघ राग का स्वरूप –

इस राग का श्यामवर्ण है। सफेद पोशाक, कंधे पर तीक्ष्ण धारवाणी खड्ग, पीछे तीन सखा राज–चिन्ह किरणिया, मोरछल और त्रिशूल लिए खड़े हैं और सामने पाँच सुंदरियाँ खड़ी हुई अपने मुकुटधारी प्रियतम को मधुर वाणी से रिझा रही है।

1.टंक : मेघ राग की रागिनी का स्वरूप –

यह विरहिणी नायिका भवन की छत पर बँगलीनुमा पलंग पर बैठी हुई।

2.मलार : मेघ राग की रागिनी का स्वरूप –

विरह–व्यथित यह रागिनी जंगल में अपने हाथों में माला लिए खड़ी है।

3.गूजरी : मेघ राग की रागिनी का स्वरूप –

यह नायिका बहुरंगे (बारह) वस्त्र धारण किए हुए है। पीतवर्ण कंचुकी एवं सुनहरी बूँटीदार सुरंगी साड़ी पहने सुसज्जित पलंग पर अकेली बैठी बेहाल स्थिति में वीणा–वादन कर रही है।

4.भूपाली : मेघ राग की रागिनी का स्वरूप –

संपूर्ण नख–शिख श्रृंगार किए तथा सफेद चीर ओढ़े यह गौरवर्ण नायिका मसनद लगाए बैठी है। लाल कंचुकी के साथ पीले रंग का घाँघरा धारण किए हुए है।

5.देसकार : मेघ राग की रागिनी का स्वरूप –

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत और चित्रकला के माध्यम से जीवन के सांस्कृतिक क्षेत्र में होने वाली उद्देश्य पूर्ति में यह तथ्य स्वीकार किया जाता है कि, दोनों कलाओं के द्वारा संगीतकार व चित्रकार की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अथवा भाव प्रत्यक्षीकरण का कार्य संभव है। ये बौद्धिक और मूल्यगत स्तर पर समान धर्मा और अनेक जगहो पर समानार्थी है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भारतीय संगीत का इतिहास – डॉ. सुनीता शर्मा
2. भारतीय चित्रकला का इतिहास – डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी
3. निबंध संगीत – लक्ष्मीनारायण गर्ग
4. संगीत शास्त्र प्रवीण – पं. जगदीश नारायण पाठक
5. भारतीय संगीत का इतिहास – पं. शरच्चन्द परांजपे
6. संगीत सुधा – डॉ. लावण्य कीर्ति सिंह